9

"यह वह बात है!"

"पतरस ... कहने लगा, ... परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यवक्ता के द्वारा कही गई है" (प्रेरितों 2:14-16)।

कल्पना कीजिए कि आपने और मैंने एक असामान्य प्रयोग करने के लिए दस लोगों को इकट्ठा किया। ये लोग आधी रात को हमारे साथ खड़े हैं। उनसे कहा जाता है, "जहां आप खड़े हैं वहां से सौ गज़ दूर दो इंच के घेरे वाले एक ठोस काले चक्र पर निशाना लगाना है। वह चक्र आपके दायें या बाएं किसी भी ओर हो सकता है; यह आपके आगे या पीछे भी हो सकता है। आप में से हर एक को एक धनुष और दस तीर दिए जाएंगे। हम यह देखना चाहते हैं कि आप में से कौन उस काले चक्र पर तीर से सफल निशाना लगा सकता है, जबकि न तो आपको यह पता है कि निशाना कहां लगाना है और न ही अंधेरे के कारण आप उसे देख सकते हैं।"

एक-एक करके, सब दो इंच बड़े उस काले चक्र को अंधेरे में टटोलते हुए आगे बढ़कर तीर छोड़ते हैं। किसी का तीर दायें, तो किसी का बायें लगता है। कोई आगे को निशाना लगाता है; कोई घूमकर अपने पीछे को। अन्ततः, वे सौ तीर रात के घने अंधेरे में अदृश्य प्रकाश की धारियों की तरह छोड़े जाते हैं। फिर, अपनी टार्चें लेकर हम उस काले चक्र को ढूंढ़ते हैं।

आपको ज़्या लगता है कि कितने तीरों से सफल निशाना लग पाया होगा? "किसी से भी नहीं। एक तीर से भी नहीं," आप दृढ़ता से उज़र देते हैं। हो सकता है कि फिर आप कहें, "जब तक किसी को यह नहीं दिखाया जाता कि निशाना कहां लगाना है तो उसे कैसे पता चल सकता है।" आप ने बिल्कुल सही कहा। परन्तु, इस तथ्य पर विचार करें: जो मनुष्यों से नहीं हो सकता वह परमेश्वर ने अपनी प्रेरणा से मनुष्यों को करने के योग्य बनाया!

नये नियम के समयों और यीशु की सेवा के समय पवित्र आत्मा के ईश्वरीय धनुष से भविष्य की ओर तेज़ भविष्यवाणी के तीर चलाए गए। बाद में, समय की सूई द्वारा भविष्य का पर्दा हटा देने पर, हर तीर सटीक और बिल्कुल सही निशाने पर लगता है।

कुछ भविष्यवाणियां भविष्य की घटनाओं में लोगों और स्थानों का परिचय करवाते हुए नाम लेकर की गई थीं! अन्य भविष्यवाणियों में *भविष्यवज़्ता के समय* और *मसीहा के समय* दोनों से जुड़े संदेशों के साथ दोहरी भविष्यवाणियां थीं। आदर्श स्वरूप से मेल खाती एक जैसी मिलती-जुलती भविष्यवाणी हो, परन्तु हर भविष्यवाणी का तीर अपने निर्धारित लक्ष्य

पर लगता था।

यद्यपि पुराने नियम में कलीसिया को ''कलीसिया'' शज़्द के द्वारा नहीं बताया गया, परन्तु इसमें संकेत को पहचाना जाता था (आमोस 9:11) और कई बार ''अनन्तकाल के राज्य'' (दानिय्येल 2:44) या ''नई वाचा'' (यिर्मयाह 31:31) या ''यहोवा के भवन का पर्वत'' (यशायाह 2:2) जैसे शज़्द से स्पष्ट किया जाता था। आने वाले राज्य का पुराने नियम की भविष्यवाणी में विशेष स्थान था।

आने वाले ''राज्य'' के रूपक के साथ पवित्र आत्मा द्वारा आने वाली कलीसिया के बारे में बताने के लिए तीन प्रकार की भविष्यवाणियों का इस्तेमाल किया गया। आइए कलीसिया के सज़्बन्ध में एक प्रचलित दोहरी भविष्यवाणी को देखते हैं कि यह किस प्रकार कलीसिया के आश्चर्यकर्म से आरज़्भ होने को चिह्नित करती है।

व्याज़्या: पवित्र शास्त्र ज़्या कहता है?

पिन्तेकुस्त के दिन अपने प्रवचन में, पतरस ने योएल की उस प्रसिद्ध भविष्यवाणी को उद्धृत किया (प्रेरितों 2:16-21; योएल 2:28-32) जिसमें यह संकेत था कि ''अंत के दिनों'' का युग पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म से आने के साथ आरज़्भ होगा।

पूरा होने की प्रकृति

योएल का प्रकाशन दोहरी भविष्यवाणी है: योएल के समय के लिए, इसमें यह प्रतिज्ञा थी कि परमेश्वर के लोगों को आत्मिक आशिषें मिलेंगी यदि वे अपने पापों से मन फिराकर परमेश्वर की ओर मुड़ें। एक भावी अर्थ में, यह उस दिन की ओर इशारा था जिसमें पवित्र आत्मा के विशेष रूप से बहाये जाने से एक नया युग या काल आरज़्भ होना था।

प्रेरितों को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु दोनों के द्वारा पवित्र आत्मा के इस बपतिस्मे के विषय में सचेत किया गया। प्रचार करने की अपनी संक्षिप्त सी सेवकाई में, यूहन्ना ने कहा था, ''मैं तो पानी से तुज़्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शज़्तिशाली है। मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुज़्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा'' (मज़ी 3:11)। पुनरुत्थान के बाद अपने संदेशों में, यीशु ने अपने प्रेरितों से फिर पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने की प्रतिज्ञा की, जिसे उसने ''पिता की प्रतिज्ञा'' कहा। प्रेरितों 1:4, 5 कहता है, उसने ''उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो ज़्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे।'' एक अन्य अवसर पर उसने उन्हें बताया, ''और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो'' (लूका 24:49)। यीशु इस बात में कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा किसे मिलेगा, उसके पाने वालों के रूप में अपने प्रेरितों का नाम बताने में यूहन्ना से अधिक स्पष्ट था।

पूरा होने का अर्थ

प्रेरितों के काम 2 अध्याय के आरज़्भ में, प्रेरितों ने स्वर्ग से पवित्र आत्मा उन पर बहाये जाने में योएल की प्रतिज्ञा के पूरा होने का अनुभव किया। लूका ने लिखा है, ''और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे'' (प्रेरितों 2:3, 4)। आत्मा के इस बहाए जाने के समय ''बड़ी आंधी की सी सनसनाहट'' (प्रेरितों 2:2) का शोर भी हुआ। पिन्तेकुस्त का दिन मनाने के लिए यरूशलेम आने वाले लोगों की भीड़ उस शोर को सुनकर वहां जमा हो गई और लोग पूछने लगे कि वहां ज़्या हो रहा है। लोग एकत्र होकर प्रेरितों से वहां इकट्ठा हुए लोगों की अलग-अलग उप-भाषाओं और भाषाओं में परमेश्वर के सामर्थ के कामों की बातें सुनकर चकित हो गए थे।

लोगों की वह भीड़ यह सब देख और सुन कर परेशान और उलझन में थी। उन में से कुछ लोगों ने, शायद भय और अज्ञानता के कारण, प्रेरितों पर पीये होने का आरोप लगाया था। पतरस ने यूनानी में, जो उस समय की विश्वव्यापी भाषा थी सज़्बोधित करते हुए, भीड़ का ध्यान आकर्षित किया और उनके सामने सिद्ध किया कि यीशु ही परमेश्वर का मसीह था। पवित्र आत्मा की अगुआई से, उसने समझाया कि पवित्र आत्मा का वह बहाया जाना योएल की भविष्यवाणी का पूरा होना था। उसकी बातों से योएल की भविष्यवाणी का मुज़्य अर्थ सदा के लिए स्पष्ट हो जाता है कि ''यह वह बात है, जो योएल भविष्यवज़्ता के द्वारा कही गई है'' (प्रेरितों 2:16)। पिछली एक पीढ़ी के प्रसिद्ध प्रचारक, फोय एल. वालेस का कहना था, ''पतरस ने कहा, 'यह वही बात है!' '' नया युग अर्थात कलीसिया का युग आरज़्भ हो रहा था। परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त एक प्रेरित पतरस ने हमारे लिए योएल की भविष्यवाणी का अर्थ बताया है। उसकी संक्षिप्त व्याज़्या हमें आत्मा की भविष्यवाणी की अपनी व्याज़्या देती है।

मानवीय इतिहास का आरंभ सृष्टि के आश्चर्यकर्म अर्थात परमेश्वर के हाथ से पुरुष और स्त्री के बनाए जाने से हुआ। प्रेरितों 2 अध्याय में पृथ्वी पर परमेश्वर के आत्मिक राज्य के आरज़्भ में, फिर से पवित्र आत्मा द्वारा कलीसिया को बनाने में आश्चर्यकर्म मिलता है।

पूरा होने की परिपूर्णता

यह सत्य है कि पिन्तेकुस्त के दिन योएल की सज़्पूर्ण भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई थी, ज़्योंकि योएल ने पुत्रों, पुत्रियों, बूढ़ों, जवानों, दासों और दासियों के पवित्र आत्मा पाने और भविष्यवाणी करने, दर्शन देखने और स्वप्न देखने की बात कही थी। उस दिन आत्मा के इन प्रदर्शनों के होने का हमारे पास कोई रिकॉर्ड नहीं है। इसके अलावा, अपोकलिप्टिक भाषा में, शायद योएल ने अपनी भविष्यवाणी के अगले भाग में आने वाले न्याय के दिन की बात की। शायद योएल द्वारा की गई भविष्यवाणी की केवल कुछ बातें ही पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हुईं। तो फिर हमें पतरस की बात का अर्थ ''यह वह बात है, जो योएल भविष्यवज़्ता के द्वारा कही गई है'' कैसे समझना चाहिए?

पतरस योएल की भविष्यवाणी के *सार* अर्थात यह कि ''अंत के दिनों'' का आश्चर्यकर्म से आरज़्भ होने कि उस दिन पूरा हो रहा था, की घोषणा कर रहा था। इस अलौकिक घटना के द्वारा, प्रेरितों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया गया था। इस बपतिस्मे से उन्हें लोगों को परमेश्वर का प्रकाशन देने (प्रेरितों 2:22-36), दूसरों को पवित्र आत्मा देने (प्रेरितों 8:14, 15) और उस संदेश की जो वे आश्चर्यकर्मों के द्वारा बताते थे (इब्रानियों 2:2-4) पुष्टि करने के लिए सामर्थ देने के लिए था। इसलिए, पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों पर पवित्र आत्मा का आना *पहला चश्मा* था जो मसीही युग के शुरुआती भाग का *आश्चर्यकर्म के साथ धारा* का निकलना था। बाद के दिनों में प्रेरित दूसरे मसीहियों पर हाथ रखकर उन्हें पवित्र आत्मा का आश्चर्यकर्म करने का दान देते थे। हाथ रखने से मिले इस दान से पुत्रों, पुत्रियों, बूढ़ों, जवानों, दासों और दासियों को भविष्यवाणी करने की सामर्थ मिलनी थी।

योएल ने कहा था कि परमेश्वर अपना आत्मा ''सब मनुष्यों'' पर उण्डेलेगा (प्रेरितों 2:17; योएल 2:28)। उसकी भविष्यवाणी का यह भाग निश्चय ही प्रतिनिधि की तरह पूरा हुआ था। पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरित यहूदी जाति के पक्ष में थे (प्रेरितों 2), जबकि परमेश्वर ने यह प्रकट करने के लिए कि अन्यजाति भी परमेश्वर के राज्य में स्वीकार होने थे (प्रेरितों 10) कुरनेलियुस के घराने पर पवित्र आत्मा बहाया था। इसलिए, पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों के साथ और बाद में कुरनेलियुस के अन्यजाति परिवार तथा मित्रों के साथ, परमेश्वर ने ''सारी मनुष्यजाति'' के प्रतिनिधि बनाकर अपना आत्मा बहाना था।

पूरा होने की स्पष्टता

आत्मा के इस बहाये जाने के अर्थ से किसी प्रकार की उलझन नहीं होनी चाहिए। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए एक प्रेरित ने स्पष्ट बता दिया था कि यह तो योएल की भविष्यवाणी का पूरा होना था। उस घटना की परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त पतरस द्वारा की गई व्याज़्या से हम दृढ़ता से कह सकते हैं कि यह घटना ''अंत के दिनों'' का आरंभ था। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा उस विशेष युग का आरंभ था जिसकी ओर सब भविष्यवज़्ताओं ने देखते हुए उसकी भविष्यवाणियां की थीं।

परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म से प्रेरितों पर पवित्र आत्मा भेजने के द्वारा नई वाचा बांधने और मानवीय इतिहास के इस अंतिम भाग का आरंभ किया। उसकी इच्छा मनुष्य को लिखित प्रकाशन में पूरी तरह से प्रकट होने तथा कलीसिया के युग का पूर्ण आरज़्भ होने के साथ, आश्चर्यकर्म होने बन्द हो गए, ज़्योंकि उनकी पुष्टि की अब कोई आवश्यकता नहीं थी (1 कुरिन्थियों 13:8-10)। आश्चर्यकर्मों का युग समाप्त हो गया, परन्तु कलीसिया का युग ''संसार के इतिहास'' के अंतिम युग के रूप में समय के अंत तक रहेगा।

उदाहरण: पवित्र शास्त्र का ज़्या अर्थ है?

मान लीजिए कि कोई आदमी परमेश्वर के आने वाले राज्य के विषय में पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पढ़ता है परन्तु उसका मन उन भविष्यवाणियों के अर्थ के बारे में स्पष्ट

नहीं है। उसे पक्का पता नहीं है कि आने वाला राज्य कैसा होगा। भविष्यवाणी के इस विषय को समझने और स्पष्ट करने के लिए यह आदमी किससे पूछेगा?

यह आदमी प्रेरितों 2 अध्याय में जा सकता है। यह महत्वपूर्ण अध्याय उसे इन सभी भविष्यवाणियों के पूरा होने के आरम्भ को बताएगा। यदि वह इस बारे में उलझन में है कि आने वाला राज्य कैसा होना था, तो प्रेरितों 2 अध्याय उसे उस आने वाले राज्य को "आ चुके" राज्य के रूप में दिखाएगा। यदि उसे पक्का पता नहीं था कि आने वाला राज्य कैसा होगा, तो प्रेरितों 2 अध्याय से उसे पता चलेगा कि लोग किस प्रकार कलीसिया के रूप में अर्थात आने वाले राज्य की भविष्यवाणियों के परमेश्वर की ओर से पूरा होने के रूप में रहते हैं।

पिन्तेकुस्त के दिन
पवित्र आत्मा का बपतिस्मा
उस विशेष युग का प्रारम्भ था
जिसकी ओर सब भविष्यवक्ताओं ने देखते हुए
भविष्यवाणियां की थीं।

1975 में एक प्रीचिंग कैम्पेन के लिए मुझे सिंगापुर में बुलाया गया था। हमने सिंगापुर की सुन्दरता के बारे में सुना तो था परन्तु उसे देखा कभी नहीं था। सिंगापुर में काफी समय से रह रहे एक प्रचारक, गोर्डन होगन ने हमें इसकी तैयारी में सहायता करने के लिए जानकारी भेजी। मैंने मन की आखों से आराधना सभाओं, लोगों और वहां की परिस्थितियों को देखने का प्रयास किया। मैंने उस देश के बारे में और उन लोगों के बारे में जिनमें मैंने प्रचार करना था, जानकारी एकत्र की। कैम्पेन से छह महीने पहले, हमें पत्र, विज्ञापन के लिए इस्तेमाल किए जा रहे इश्तिहार और स्वागत के वक्तव्य मिले। हमने इस सबको इकट्ठा करके यह तस्वीर बनाने की कोशिश की कि वह कैम्पेन कैसा लगेगा। अंत में, अमेरिका से सिंगापुर जाने का दिन आ गया। चौबीस घण्टे की उड़ान के बाद हम सिंगापुर पहुंचे। पहली आराधना सभा के दौरान, मैं कह सकता था, "अब मैंने देख लिया कि यह कैसा लगता है। अब मुझे समझ आया है।"

पुराने नियम का अध्ययन करते और आने वाले राज्य की बहुत सी भविष्यवाणियों के बारे में विचार करते हुए, कोई यह तस्वीर बनाने की कोशिश कर सकता है कि राज्य आने पर कैसा लगना था। प्रेरितों 2 अध्याय में पहुंचकर परमेश्वर की प्रेरणा से पतरस द्वारा राज्य के आरम्भ को कलीसिया के रूप में परिचय कराते देखकर वह कह सकता है, "अब मैंने देख लिया कि यह कैसा लगता है। अब मुझे समझ आ गई।" हमें कितने कृतज्ञ होना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें प्रेरितों 2 अध्याय में राज्य की "वास्तविक" तस्वीर दे दी है!

किसी ऐसे व्यक्ति की बातों से जो बहस करता है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा जिस राज्य की बात कही गई थी वह अभी नहीं आया है, भ्रमित न हों। केवल प्रेरितों 2 अध्याय खोलें और इन भविष्यवाणियों के आश्चर्यकर्म से पूरा होने को पढ़ें। प्रेरितों 2

अध्याय न केवल यह साबित करता है कि राज्य आ चुका है बल्कि हमें यह भी बताता है कि परमेश्वर अपने राज्य को कैसा बनाना चाहता था।

अन्तरराष्ट्रीयकरण: पवित्र शास्त्र हमसे ज़्या चाहता है?

हमें इस आयत को कैसे मानना चाहिए? यह हमारे जीवन में कैसे लागू होनी चाहिए?

पहले हमें अपने अन्दर *एक स्थिर बात को मानने* के लिए पुराने नियम की इस भविष्यवाणी को मान्यता देनी चाहिए। कलीसिया के प्रारज़्भ में हमारा विश्वास दृढ़ और अडिग होना चाहिए। परमेश्वर ने अपने आत्मा के आश्चर्यकर्म से इसके आरज़्भ होने के बारे में बता दिया है। अपनी कलीसिया के आरज़्भ को प्रकट करने के लिए परमेश्वर इससे अच्छा ढंग ज़्या चुन सकता था? परमेश्वर अपने राज्य के आने को प्रकट करने के लिए इससे बढ़िया ढंग कौन सा चुन सकता था?

दूसरा, पिन्तेकुस्त के दिन योएल की भविष्यवाणी के पूरा होने से हमारे अंदर *हिलाए न जाने का बोध* उत्पन्न होना चाहिए। हम इस बात से आश्वस्त हैं कि परमेश्वर का राज्य आ चुका है और हम इसमें शामिल हो सकते हैं और रह सकते हैं। यदि हम उसके आत्ज़ा के बहाए जाने की घटना में शामिल परमेश्वर की गवाही को मानते हैं, तो हम इस एक आनन्दपूर्ण अहसास से जी सकते हैं कि हम परमेश्वर के राज्य के लोग बन सकते हैं और बनकर रहते हैं। यह भविष्यवाणी और इसका पूरा होना हमें राज्य के परिचय, महत्व तथा प्रकट होने की भविष्यवाणी और उसके पूरा होने की निश्चितता बताते हैं।

तीसरा, आइए *दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ इसे ग्रहण करें।* हमें परमेश्वर के राज्य में और परमेश्वर के राज्य के संदेश का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध होना आवश्यक है। यीशु के द्वारा, हमें उसके राज्य में लाया गया है (कुलुस्सियों 1:13)। जैसे किसी ने कहा है, ''हम स्वर्ग में जाने की कोशिश करने वाले इस संसार के लोग नहीं हैं; हम तो स्वर्ग के नागरिक हैं जो इस संसार में से निकलने की कोशिश कर रहे हैं।'' हम स्वर्गीय राज्य के लोग हैं और हमारे लिए दूसरे लोगों में उस राज्य को फैलाने का काम करना आवश्यक है।

सारांश

आश्चर्यकर्म से पवित्र आत्मा का बहाया जाना सब लोगों के लिए कलीसिया के महत्व की पुष्टि करता है। पवित्र शास्त्र की शिक्षा के प्रति विश्वासी बने रहने के लिए आवश्यक है कि हम प्रेरितों 2 अध्याय को योएल की भविष्यवाणी के सार के पूरा होने के रूप में देखें। ''अंत के दिन'' पिन्तेकुस्त के दिन राज्य के आने से आरज़्भ हो गए जिसकी प्रतीक्षा पुराने नियम की भविष्यवाणियों के राज्य पर ज़ोर देने के कारण लज़्बे समय से थी।

आज हम राज्य अर्थात कलीसिया में वैसे ही प्रवेश करते हैं जैसे पिन्तेकुस्त के उस ऐतिहासिक दिन में लोगों ने किया था। विश्वास से उन लोगों ने जिन्होंने पतरस के प्रचार को सुना था, पूछा था, ''हम ज़्या करें'' (प्रेरितों 2:37)। पवित्र आत्मा की अगुआई से, उसने जवाब दिया था, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए

यीशु मसीह के नाम [में] बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। तीन हज़ार लोगों ने उसकी बातों को मानकर बपतिस्मा लिया था। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करके वे ''प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन'' रहते थे (प्रेरितों 2:42)।

हार्डिंग यूनिवर्सिटी में अपने छात्रों को मैं अज़्सर बताता हूं कि दूसरे नौजवान उनके साथ प्रसन्नता से काम बांट लेंगे। हर वर्ष कई योग्य छात्र यूनिवर्सिटी में नहीं आ पाते ज़्योंकि उनके पास फीस देने के पैसे नहीं होते। यदि कोई उनका खर्च उठा ले और वे यूनिवर्सिटी में दाखिल हो जाएं, तो वे इस अवसर का लाभ कैसे उठाते हैं! पुराने नियम के योग्य लोगों को आने वाले राज्य का इतना पता था कि वे इसे देखने और इसका भाग बनने को तरसते थे, परन्तु यह सौभाग्य उन्हें नहीं मिला। लेकिन हमें मिल पाया है। हम ''अन्त के दिनों'' के युग में अर्थात उच्च और असाधारण अनुग्रह के युग अर्थात उस समय में रह रहे हैं जब राज्य विद्यमान है। पुराने नियम के उन लोगों का ध्यान करें जो वह देखना चाहते थे जो हम देख़ रहे हैं और वह बनना चाहते थे जो बनने का हमें अवसर मिला है!

यदि आप परमेश्वर के राज्य से बाहर हैं तो जल्दी से उसके राज्य में आ जाएं, और कांपते हुए उस अनुग्रह के लिए कृतज्ञ होकर जो हम पर किया गया है, प्राप्त करें। यदि आप उसके राज्य में आ गए हैं तो यह कहते हुए इधर-उधर न खड़े हों, ''देखो संसार किसके पास आया है,'' बल्कि आनन्द से कहें, ''देखो संसार के पास ज़्या आया है!''

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. इस अध्याय के आरज़्भ में तीन तरह की भविष्यवाणी बताएं। प्रत्येक का उदाहरण दें।
2. ''अंत के दिनों'' का ज़्या अर्थ है?
3. चर्चा करें कि योएल की भविष्यवाणी किस प्रकार दोहरी भविष्यवाणी हो सकती है।
4. वे आयतें बताएं जिनसे संकेत मिलता है कि पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्रेरितों से की गई है।
5. पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के बहाये जाने का वर्णन विस्तार से करें।
6. ज़्या योएल की सज़्पूर्ण भविष्यवाणी पिन्तेकुस्त के दिन ही पूरी हो गई थी?
7. पतरस के यह कहने का ज़्या अर्थ था कि ''यह वह बात है जो योएल भविष्यवज़्ता के द्वारा कही गई है''?
8. योएल की भविष्यवाणी में ''सब मनुष्यों पर'' शज़्दों का आप ज़्या अर्थ समझते हैं?
9. आश्चर्यकर्मों का युग कब खत्म हो गया?
10. प्रेरितों 2 अध्याय एक महत्वपूर्ण अध्याय ज़्यों है?
11. हमें योएल की भविष्यवाणी के पूरा होने को कैसे लेना चाहिए?
12. हम परमेश्वर के राज्य में कैसे आते हैं?
13. हम परमेश्वर की कलीसिया में कैसे आते हैं?